10

''कलीसिया'' क्या है?

किसी अन्य देश और संस्कृति का एक व्यक्ति संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में लम्बी यात्रा पर जाना चाहता था। अंग्रेज़ी सीखने के लिए पूरी कोशिश करने के बाद उसे लगने लगा कि अब वह वहां जाने के लिए तैयार है। उसने अमेरिका के लिए अपनी चिर-प्रतीक्षित यात्रा शुरू की और वहां पहुंचने पर जल्द ही अंग्रेज़ी के उसके ज्ञान की परख होने लगी। कुछ चीज़ें खरीदने के लिए वह करियाने की एक छोटी दुकान पर गया। काउंटर पर उसे बताया गया कि उसके कितने पैसे बने। उसने जेब में हाथ डाला, पैसे निकाले, गिने, और क्लर्क को दे दिए। सामान को एक थैले में डाल वह चल पड़ा। जब दरवाज़े से बाहर निकल रहा था तो, क्लर्क ने बड़ी विनम्रता से कहा, ''कम बैक (अर्थात वापस आइए)!'' (वहां किसी को ''कृपया फिर पधारिये'' कहने के लिए इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाता है)। वह व्यक्ति रुककर, मुड़ा और काउंटर पर वापस आ गया। क्लर्क ने कहा, ''मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं?'' हड़बड़ाए हुए उस आदमी ने कहा, ''आपने मुझे वापस आने को कहा!''

क्लर्क की बात का अर्थ था कि ''आपका हमारे यहां सामान खरीदने के लिए धन्यवाद; हमें जल्दी ही फिर सेवा का मौका दीजिए'' और उस आदमी द्वारा उसका शाब्दिक अर्थ निकाल लिया गया। क्लर्क की बात को न समझ पाने की उसकी गलती के कारण उनका सम्प्रेषण नहीं हो सका।

हम सभी को ऐसा ही कोई अनुभव होगा। हम बोले जाने वाले उन शब्दों से परिचित थे, जो बोले गए थे। परन्तु हमें यह समझ नहीं आया कि बोलने वाला उन शब्दों का इस्तेमाल किस अर्थ में कर रहा था। हमें शब्दों की समझ थी परन्तु उसके द्वारा अर्थ में जो संदेश था, वह हमें बिल्कुल भी समझ नहीं आया।

फिर भी ध्यान दें कि सम्प्रेषण कठिन है। सफल सम्प्रेषण के लिए बोलने वाले

और सुनने वाले को काफी कुछ करना पड़ता है।

आइए सञ्प्रेषण की इस प्रक्रिया को हम बाइबल के अध्ययन पर लागू करें। हमारे और बाइबल के बीच उपयोगी सञ्प्रेषण के लिए आवश्यक है कि हम केवल कहे गए शब्दों पर ही ध्यान न दें, बल्कि हम उस अर्थ पर भी ध्यान दें जो इन शब्दों का चयन करते समय आत्मा की प्रेरणा पाए लेखक के मन में था। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी शब्द या वाक्य को समझने के लिए उसे उसी सन्दर्भ में देखने की कोशिश करनी चाहिए, जिसमें वह दिखाया गया है। परमेश्वर के साथ ईमानदारी मांग करती है कि हम उसी अर्थ की खोज करें, जिसका संदेश परमेश्वर ने हमें देना चाहा था।

''कलीसिया'' शब्द से हम में से अधिकतर लोग परिचित हैं। बाइबल में इस शब्द के बारे में परमेश्वर हमें बड़े विस्तार से बताता है। इस शब्द के बारे में परमेश्वर और हमारे बीच सही सञ्प्रेषण स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि हम बाइबल जगत में पहुंचकर, और उन शब्दों, अर्थों, उदाहरणों और विचार रूपों को देखें, जिनका प्रयोग यीशु, प्रेरितों और अन्य लोगों के द्वारा किया गया, जिन्होंने परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से बाइबल को लिखा।

''कलीसिया'' क्या है? क्योंकि नये नियम की सताइस में से सत्रह पुस्तकों में,[1] इस शब्द का प्रयोग विभिन्न संदर्भों में 114 बार[2] किया गया है, हमें क्या सञ्प्रेषित किया जा रहा है? जब यीशु ने कलीसिया की स्थापना की तो, उसने क्या बनाया?

एक आत्मिक देह

सब से पहले हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि कलीसिया एक आत्मिक देह है, मसीह की अपनी आत्मिक देह।

कलीसिया के अंग्रेज़ी शब्द ''चर्च'' की बात करते ही हमारे मन में एक भौतिक इमारत (गिरजा घर) की तस्वीर बन जाती है, जिसमें आराधना होती है। यद्यपि, नये नियम में इस शब्द का यह अर्थ कहीं नहीं दिया गया।

बाइबल में ''चर्च'' (कलीसिया) शब्द उनके लिए प्रयुक्त हुआ है, जिन्होंने मसीह के सुसमाचार को मान लिया है और उन्हें उनके संगठित, स्थानीय और विश्वव्यापी रूप से मसीह के लहू द्वारा छुटकारा दिलाया गया है। छुटकारा पाए हुए लोगों की पहली मण्डली जो परमेश्वर की आराधना के लिए संगठित या इकट्ठी होती थी, उसे ''कलीसिया'' (चर्च) कहा जाता था। कुरिन्थुस की कलीसिया में जब इकट्ठे होने पर

एकता नहीं थी, तो पौलुस ने उन्हें डांटा। उसने मसीहियों के लिए शब्द ''कलीसिया'' का उपयोग किया। उसने कहा, ''मैं यह सुनता हूं कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो तो तुम में फूट होती है ...'' (1 कुरिन्थियों 11:18)।

आगे, ''कलीसिया'' विशेष स्थान पर छुटकारा पाए हुए लोगों की देह के लिए प्रयुक्त हुआ है। कुरिन्थुस में छुटकारा पाए हुए लोगों की देह को ''परमेश्वर की... कलीसिया... जो कुरिन्थुस में है'' कहा गया (1 कुरिन्थियों 1:2क)।

और भी आगे, ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग समस्त संसार में छुटकारा पाए हुए सब लोगों के लिए किया गया है। पौलुस ने कलीसिया को विश्वव्यापी अर्थ में बताया जब उसने कहा, ''क्योंकि पति पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है'' (इफिसियों 5:23)।

आइए, नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द के इन प्रयोगों को प्रेरितों के काम की पुस्तक की विशेष घटनाओं पर लागू करें। पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम के अनेक निवासियों और पर्यटकों (प्रेरितों 2:1-4) ने पवित्र आत्मा के बहाए जाने के बाहरी चिह्न सुने और जो कुछ हो रहा था, उसे देखने के लिए प्रेरितों के इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये थे। पतरस ने भीड़ में प्रचार किया, और उसने उन्हें समझाया कि यीशु ही प्रभु और मसीह है (प्रेरितों 2:36)। पीड़ित मन सें, अनेक लोग पुकार उठे, ''हम क्या करें?'' (प्रेरितों 2:37ख)। क्योंकि उनकी यह पुकार विश्वास होने के कारण ही थी, इसलिए पतरस के लिए उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं थी कि वे विश्वास करें, परन्तु जो कुछ उन्होंने अभी तक नहीं किया था, वह करने के लिए मन फिराने और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने के लिए उन्हें बताना आवश्यक था (प्रेरितों 2:38)। तीन हज़ार लोगों ने खुशी से उद्धार का मार्ग अपना लिया, मन फिराया और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 2:38, 41)।

ध्यान दें कि उस दिन जो कुछ हुआ, उसका लूका ने किस प्रकार वर्णन किया है। उसने आरम्भिक परिवर्तितों के बारे में बताया कि वे क्या बन गये थे (प्रेरितों 2:41)। जो प्रभु के वचन के आज्ञाकारी थे, वे प्रभु की कलीसिया बन गए थे। वे एक संगति, एक समूह का अंग बन गए। दूसरा, लूका ने उनके नये व्यवहार को ध्यान में रखकर उनके बारे में वर्णन किया। परमेश्वर के प्रति अपने व्यवहार में उनमें नया जीवन था (प्रेरितों 2:42)। छुटकारा पाए हुए लोगों की यह देह परमेश्वर की आराधना करती थी और प्रेरितों से स्वर्गीय संदेश प्राप्त करती थी। एक दूसरे के प्रति व्यवहार में उन्हें नया जीवन मिला था (प्रेरितों 2:44, 45)। वे एक दूसरे की देखभाल करते थे, एवं

आवयश्कताओं के अनुसार एक दूसरे की चिंता किया करते थे। एक दूसरे का बोझ सहते, तंगी में उसकी मदद करते, और एक दूसरे को सञ्भालते थे। विश्वासियों की इस देह को बाद में प्रेरितों के काम की पुस्तक में ''कलीसिया'' (अर्थात चर्च) कहा गया (प्रेरितों 5:11)।

छुटकारा पाए हुए ये लोग जब यरूशलेम में परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठे होकर ''कलीसिया'' बन जाते थे (संगठित अर्थ में)। यरूशलेम में छुटकारा प्राप्त सभी लोगों को ''यरूशलेम की कलीसिया'' (स्थानीय अर्थ में) कहा जाता था। जब वह कलीसिया बढ़कर फैल गई तो उस समय छुटकारा पाए हुए संसार के सब लोगों के लिए कहा जा सकता था, ''यीशु अपनी कलीसिया को (विश्वव्यापी अर्थ में) लेने और स्वर्ग में ले जाने के लिए दोबारा आएगा''।

ज़िन्दा जीव

दूसरा, हमें कलीसिया को एक जीव-जीवित वस्तु के रूप में देखना चाहिए।

कुछ लोग उद्धार पाए हुए लोगों के समूह ''कलीसिया'' को एक संगठन समझते हैं, जैसे कोई इन्सानी सभा हो। वे इसे इस प्रकार देखते हैं, और इससे अधिक और कुछ नहीं।

छुटकारा पाए हुए लोगों के रूप में कलीसिया एक जीवित ढांचा है, यह कोई मानवीय संगठन नहीं। कलीसिया जिसकी स्थापना मसीह ने की, वह जीवित और परमेश्वर के जीवन और आशिषों से रोमांचित है; यह मनुष्य द्वारा बनाया हुआ संगठन नहीं है, जो मनुष्य की बुद्धि, परिकल्पना और गतिविधियों से क्रियाशील होता हो।

पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया को मन्दिर, पवित्रस्थान, अर्थात परमश्वेर का निवास स्थान बताया। ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?'' उसने 1 कुरिन्थियों 3:16 में कहा।[3] बाद में 1 कुरिन्थियों 6:19, 20 में पौलुस ने व्यभिचार की निन्दा करते हुए इसे देह के विरुद्ध पाप बताकर व्यक्तिगत मसीही को परमेश्वर के मन्दिर के रूप में चित्रित किया। पहला कुरिन्थियों 3:16 कलीसिया के बारे में है, निजी मसीही के बारे में नहीं।[4] पौलुस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि परमेश्वर अपने लोगों में निवास करता है। वह अपने लोगों में व्यक्तिगत (1 कुरिन्थियों 6:19, 20) और सामूहिक तौर पर (1 कुरिन्थियों 3:16) निवास करता है। पुराने नियम के समयों में, उजाड़ में परमेश्वर

का निवास स्थान तम्बू था और बाद में यरूशलेम का मन्दिर; परन्तु मसीही युग में पौलुस के अनुसार वह कलीसिया, अर्थात अपने लोगों में निवास करता है।

कलीसिया एक जीवित इमारत के जैसी हो सकती है। पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों का चित्रण करते हुए कहा, कि वे एक इमारत बन गए थे जो मसीहियों से बनी थी और वह बढ़ती ही जा रही थी। पौलुस ने कहा, ''जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिए एक साथ बनते जाते हो'' (इफिसियों 2:21, 22)। जिस इमारत की बात पौलुस ने की वह प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नींव पर टिकी हुई है, जिसके कोने के सिरे का मुख्य पत्थर मसीह यीशु आप ही है। इमारत की नींव के ऊपर की संरचना मसीहियों से बनती है। इमारत का ऊपरी भाग अथवा छत नहीं है; जैसे-जैसे लोग सुसमाचार को मानते और इसमें मिलते जाते हैं, यह ऊपर की ओर उठती जाती है।

फिर तो, कलीसिया कोई संगठन नहीं है- यह तो ज़िन्दा जीव है, जिसमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है। यह मसीहियों की एक देह है जो परमेश्वर के जीवन से जीवित है और जो परमेश्वर के आत्मा के निवास स्थान का रूप ले लेती है। आप कह सकते हैं कि कलीसिया इस पृथ्वी पर परमेश्वर का घर है।

घनिष्ठ स बन्ध

तीसरा, कलीसिया का मसीह के साथ गहरा सम्बन्ध माना जाना चाहिए।

सांसारिक दृष्टिकोण से, लोगों के किसी समूह के साथ जिससे कलीसिया बनती है, अच्छा सम्बन्ध होने को कलीसिया के सदस्य समझा जा सकता है। परन्तु कलीसिया का यह अर्थ निकालने से, एक महत्वपूर्ण सच्चाई नज़रअंदाज़ हो जाती है। कलीसिया का घनिष्ठ,महत्वपूर्ण, और चलता रहने वाला सम्बन्ध है; और वह सम्बन्ध यीशु के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध पर टिका हुआ है।

कलीसिया का यीशु के साथ चलता रहने वाला सम्बन्ध इतना गहरा है कि इसे देह के साथ सिर का सम्बन्ध कहा गया है। मसीही लोग देह हैं, और यीशु सिर। परमेश्वर ने कलीसिया को मसीह की आत्मिक देह बनाया है, जो आज पृथ्वी पर अदृश्य मसीह का प्रकट भाग है। पृथ्वी पर रहते समय छुटकारे के अपने काम को पूरा करने के लिए जिस प्रकार प्रभु को शारीरिक देह की आवश्यकता थी, उसी प्रकार अब

छुटकारे के अपने काम के फल को हर जगह, हर एक तक पहुंचाने के लिए उसे आत्मिक देह की आवश्यकता है। इसलिए, पिन्तेकुस्त के दिन, यीशु के मुर्दों में से जी उठने के पचास दिन बाद, कलीसिया जो कि मसीह की आत्मिक देह है, को बनाने के लिए पवित्र आत्मा उतरा। उस दिन से लेकर आज तक छुटकारा पाने वाला हर व्यक्ति अपने छुटकारे के समय,उस देह में परमेश्वर की अद्‌भुत कृपा प्राप्त करता है।

इस प्रकार नये नियम में आत्मा की प्रेरणा से लिख कर लेखकों ने कलीसिया को मसीह की ''देह'' कहा (इफिसियों 1:21-23; 5:23)। जो मसीह के सुसमाचार को मान लेते हैं, वे पृथ्वी पर मसीह की आत्मिक देह बन जाते हैं, और मूलत: देह के रूप में, सिर की अगुआई में जो कि मसीह है, काम करते हैं। यह सच है कि जब कोई बपतिस्मा लेता है, तो नया नियम विशेष तौर पर कहता है कि उसने ''मसीह में'' (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27), अर्थात ''एक देह होने के लिए'' (1 कुरिन्थियों 12:13) बपतिस्मा लिया।

कलीसिया का यीशु के साथ इतना गहरा सम्बन्ध है कि कोई भी इसमें प्रवेश कर सकता है। कलीसिया मसीह की पूर्णता है, क्योंकि उसकी देह उसकी परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ भरता है (इफिसियों 1:23)। मसीह कलीसिया की परिपूर्णता है क्योंकि उसके लोग उसी में भरपूर होते हैं (कुलुस्सियों 2:10)। कलीसिया, अर्थात उसकी देह, मसीह अर्थात सिर के बिना अधूरी है (इफिसियों 1:22)। इसी प्रकार, मसीह जो सिर है, देह अर्थात कलीसिया के बिना अधूरा है (कुलुस्सियों 1:18)। कलीसिया का सिर जो कुछ भी है और जो कुछ उसका है वह सब कलीसिया का है, और कलीसिया जो कुछ भी है और जो कुछ उसका है वह मसीह अर्थात सिर का होना चाहिए। इस प्रकार उसकी कलीसिया के रूप में, मसीही लोग प्रतिदिन निरन्तर यीशु के साथ साझेदारी का अनुभव करते हैं। वे जो मसीह में हैं केवल मसीहियत का दावा करने वाले ही नहीं बल्कि वे मसीह के अधिकारी हैं। उनके लिए जो देह में है, मसीह की भरपूरी का चश्मा खुला हुआ है।

जैसे इफिसियों 5 में पौलुस ने कलीसिया के बारे में विस्तार से बताया, उसने पति-पत्नी के सम्बन्ध का चित्र बना कर मसीह के साथ इसके सम्बन्ध की तुलना की है। उसने पति का मसीह और पत्नी का कलीसिया के रूप में चित्रण किया है। उसने इस सम्बन्ध को पहले सिद्धांत के रूप में दिखाया। जैसे पति पत्नी का सिर है वैसे ही मसीह भी कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23)। उसने इस सम्बन्ध को व्यवहार या अमल में दूसरा बताया है। जैसे पत्नी हर बात में पति के अधीन होती है, वैसे ही

कलीसिया भी मसीह के अधीन है। इसे यीशु को अपना सिर, अगुवा, और मार्ग-दर्शक मानना चाहिए (इफिसियों 5:24)। अन्त में पौलुस ने इस सज़्बन्ध का अभिप्राय बताया है। जैसे पति अपनी पत्नी से प्रेम करता है, मसीह भी कलीसिया से प्रेम करता है, और अपने विश्वासियों की इस देह को अपने साथ अनन्त काल तक रहने के लिए तैयार कर रहा है (इफिसियों 5:25-27)।

नये नियम की कलीसिया का सज़्बन्ध मुज़्य रूप से मसीह के साथ है। प्राथमिक अवस्था में यह लोगों के साथ सज़्बन्धित नहीं हैं, परन्तु कलीसिया के अन्य सदस्यों के साथ इसका सज़्बन्ध बिल्कुल वैसे हो जाता है जैसे एक ही पिता के बच्चों का एक दूसरे के साथ होता है। मसीह की देह के अंग एक दूसरे के अंग हैं, परन्तु, प्राथमिक तौर पर कलीसिया मसीह की देह है। मसीह की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए हमें मसीह के साथ सज़्बन्ध बनाना होगा, सज़्बन्ध जो इतना गहरा और खास हो कि हम उसके अंग बन जाएं जैसे देह का सज़्बन्ध सिर से होता है।

सारांश

बहुत से लोग ''कलीसिया'' शब्द के सही अर्थ के बारे में उलझन में हैं। यह उलझन नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बाइबल इसका अर्थ बहुत स्पष्ट करती है।

''कलीसिया'' क्या है? यह वह आत्मिक देह है जो उनसे बनी है जिन्होंने मसीह के सुसमाचार को माना; उसके लोग बन गए हैं, और उसके लोगों के साथ उसकी आराधना कर रहे हैं। उन्होंने उसका नाम पहन लिया है और पृथ्वी पर वे उसकी आत्मिक देह हैं। वे हर बात में मसीह को महिमा देते हैं। यह आत्मिक देह एक जीवित इमारत है जिसमें जीवते परमेश्वर का आत्मा वास करता है। कलीसिया का अंग होने का अर्थ किसी मानवीय संगठन में भाग लेना या किसी समूह की सदस्यता पाना नहीं है। इसका अर्थ है मसीह के साथ गूढ़ और चलता रहने वाला सज़्बन्ध।

कलीसिया, अर्थात मसीह की देह में, विश्वास के द्वारा प्रवेश किया जाता है। विश्वास के उत्तर में मन फिराना (प्रेरितों 17:30, 31), यीशु का अंगीकार करना कि वह परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:10), और मसीह में बपतिस्मा लेना (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27) शामिल है। बपतिस्मा लेने पर मनुष्य के पाप मिट जाते हैं; नया जन्म पाकर, वह मसीह की देह का अंग बन जाता है (प्रेरितों 2:38, 41, 47; 22:16; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

नये नियम की कलीसिया कोई डिनोमिनेशन (सञ्प्रदाय) नहीं है। सञ्प्रदाय मनुष्य के बनाए हए हैं; नये नियम में प्रभु ने कलीसिया की परिकल्पना की, इसे सृजा और इसमें वास करके वह इसे सञ्भालता है। सञ्प्रदाय पृथ्वी से अर्थात मनुष्य की ओर से बने हैं; नये नियम की कलीसिया स्वर्ग से, परमेश्वर की ओर से आई है। कलीसिया का सञ्बन्ध मसीह से है–यह उसका नाम पहनती है, उसकी आराधना के लिए ही इकट्ठा होती है, संसार में उसी का कार्य करती है और उसमें आत्मा का वास है। (''नये नियम की कलीसिया'' शीर्षक से पृष्ठ 150 पर चार्ट देखें)।

मसीह ने यह निमन्त्रण सब लोगों के लिए दिया है कि वे उद्धार की उसकी शर्तों को मान कर उसकी कलीसिया में शामिल हो जाएं (प्रकाशितवाक्य 22:17) और इस जगत में उसकी कलीसिया बन कर रहें।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 237 पर)

1. यह समझना कितना आवश्यक है कि बाइबल में पवित्र आत्मा किसी शब्द को किस प्रकार प्रयोग में लाता है, जैसे कि शब्द ''कलीसिया''?
2. नये नियम में जिन अलग–अलग ढंगों से ''कलीसिया'' शब्द का उपयोग हुआ है, उनका वर्णन करें?
3. कलीसिया परमेश्वर का मन्दिर है। आज इसका एक मसीही के जीवन में क्या अर्थ है? अंग्रेज़ी शब्द चर्च का अनुवाद कलीसिया है। क्या कलीसिया के इस नाम से पता चलता है कि इसके सदस्यों का जीवन, काम करना और आराधना करना कैसा होना चाहिए?
4. कलीसिया एक ''जीवित'' इमारत कैसे है?
5. पति पत्नी के सञ्बन्ध किस प्रकार यीशु के कलीसिया के साथ सञ्बन्ध की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं?
6. स्पष्ट वर्णन करें कि कोई मसीह की कलीसिया में प्रवेश कैसे कर सकता है?
7. कलीसिया केवल मसीह ही की कैसे है?

शब्द सहायता

डिनोमिनेशन (सञ्जदाय)- अलग-अलग नामों की धार्मिक मण्डलियों का एक समूह जिनका नाम बाइबल में नहीं मिलता, वे खास विश्वास के अधीन एक होती हैं और किसी प्रकार की काउंसिल के द्वारा उनका संचालन किया जाता है। क्योंकि बाइबल में किसी डिनोमिनेशन का उल्लेख नहीं मिलता इसलिए यह बाइबल का शब्द नहीं है।

संगति - हितों, आदर्शों या अनुभवों की सांझ; वह प्रेम जो मसीहियों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति है।

व्यभिचार - लैंगिक पाप, शादी के बिना शारीरिक सञ्बन्ध रखना।

---

[1]''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग मरकुस, लूका, यूहन्ना, 2 तीमुथियुस, तीतुस, 1 और 2 पतरस, 1 और 2 यूहन्ना या यहूदा में नहीं किया गया। [2]इथलबर्ट W. बलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एण्ड कंकॉर्डैन्स टू द इंग्लिश एण्ड ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ौन्डर्वन, 1975), 153। [3]यूनानी भाषा में ''मन्दिर'' के लिए दो शब्द हैं: *नाओस* (*naos*) और हिरोन (*heiron*)। इस पद्य में पौलुस के द्वारा ''मन्दिर'' के लिए उपयोग किया गया शब्द *नाओस* है, *हिरोन* नहीं। *नाओस* विशेष रूप से मन्दिर के, पवित्रस्थान के लिए है - मन्दिर के प्रांगण के लिए नहीं, जैसे कि शब्द *हिरोन*। पौलुस यह पुष्टि कर रहा था कि मसीह की देह परमेश्वर का निवास स्थान है। [4]इस वाक्य में यूनानी शास्त्र में ''तुम'' मध्यम पुरुष बहुवचन है, यह संकेत देते हुए कि लोगों का एक समूह ध्यान में है, न कि 1 कुरिन्थियों 6:19, 20 की तरह केवल एक व्यक्ति।